(1)

BA(H)
मैथिली प्रतिष्ठा
परिचायिका
Lecture-III

प्रो० रंजीत कुमार राम
(अतिथि सहायक प्राध्यापक) बाॅ/
मैथिली विभाग
R.S.J. college, Rajnagar
Madhubani (lnmu)

मधुपक' महाकाव्य राधा-विरह :- राधा-विरह महाकाव्य 1962 ई० मे प्रकाशित भेल तथा 1970 ई० मे साहित्य अकादेमी नई दिल्ली द्वारा पुरस्कृत कयल गेल। 'राधा-विरह' सुन्दर कल्पनापर आश्रित मैथिलीक एकटा महत्वपूर्ण महाकाव्य थिक, जाहिमे आलंकारिक भाषाक प्रचुर प्रयोग कयल गेल अछि। एकर पाण्डित्यपूर्ण वर्णन-वैशिष्ट्यक कारणेँ आधुनिक साहित्यक निधि मानल गेल अछि। संस्कृत पूर्वाचार्य लोकनि महाकाव्यक जे लक्षण-सब निरूपित कयने छथि ताहिमे बहुतोक पालन एहि महाकाव्यमे भेल अछि। ई सत्रह सर्गमे विभाजित अनेक छन्दसँ गुम्फित अछि। संस्कृत महाकाव्यक परिपाटीक अनुसार एहुमे कथानकसँ बेसी वर्णनक महत्व दृश्य अछि। एहिमे शृंगाररस अंगी अछि, आन सब रस अंग-रूपमे आयल अछि। एहिमे प्रकृति वर्णन, संध्या-वर्णन, ऋतुक विविध जातिक रूपमे भगवतीक व्यापक वर्णन बड़ मोहक बनि ~~पड़ल~~ पड़ल अछि। स्पष्टतः एकर

नायिका राधा विरहिणी। एहिमे राधाक सम्पूर्ण चित्रित नहि, केवल कृष्णक वियोगमे हुनक विरह-रूपक तकर अंकन भेल अछि।

देश-काल-पात्रक अनुसार कविलोकनि कथानकमे मोड़ देबाक अधिकारक स्तुति कऽ प्रयोग करैत देखल जाइत अछि। ओ ई रूपो पात्रकेँ अपन समय ओ समाजक अनुकूल अथवा लेल ओहिमे स्थानीय ओ सामयिक रंग भरि दैत अछि। एहिसँ ओ पौराणिक वा ऐतिहासिक पात्र भलेँ बेसी आत्मीय बुझना जाय, मुदा ओकर मौलिक स्वरूप तँ नष्ट भैए जाइत छैक। मधुप कविक एहि अधिकारक प्रयोग करबासँ बचलाह अछि। फलतः हिनक राधा अपन मूल रूपमे उपलब्ध अछि। राधा जँ मिथिलाक नहि छथि, ब्रजेक छथि, तँ प्रस्तुत महाकाव्यमे मिथिलाकेँ नाचब उचित नहि ओ ब्रजभूमिएकेँ नाचब समुचित होयत। किन्तु जहाँ धरि राधाक प्रेम ओ विरह स्वभावक सम्बन्धक अछि हुनक अनुराग-प्रवाहक सम्बन्ध अछि, मिथिलाक नारीक संग ओ एक भऽ जाइत छथि। वर्णनक बीच-बीचमे सामाजिक कुरीतिक

आगाम बढ़ कहाँसँ करबे ठठ दैत छथि। प्रमाण
वर्णनक क्रममे निम्नलिखित चित्र द्रष्टव्य —

आधा पहर रातिसँ प्राती गाबि हलाह बहुओ दैत
निन्द्र भंग करी, ताहि निन्द्रक पुनजागृ (सेंठ्य
अनुमति
बाल कुमारी अर्थात् जखन गुन आन होइ, आगाँक
कुशी ओर चौकि - खिड़की ग्रीवामे साटीफिकेट
दैत कँगनाक नहोइ, सेहो कुर-कुरानुन मानुस
कुसक पात जलपात्रक डाब धनुषीतात्र अपात्र
जराते चलकाबानि कुकेठ मुठो। मावा।

वर्णनतँ अछि ओरकुा ओरमे कुर-कुरानुन कुठो
जानि डाबमे लोता व्यवहारयुक्ति फित किला भइ
जाइत छथि। बड़ स्वाभाविक चित्र अछि। किन्तु एहि
ठाम विशेषतः द्रष्टव्य थिक ओहि कुर-कुरानुनक चालि।
हुनक अवस्था ततेक बेसी भइ गेल छनि जे शरीर
धनुष जका लीबि गेलानि अछि। एहन कुरु कोनो
रातिमे अपन तरुणी पत्नीक संग सह-शयन करबा
लेल जेहों उद्यत लइत छथि कि पत्नी चौकी-खिड़कीक
सिटकी दैत छथिन। प्राती की गबैत छथि, पहर
दैत छथि। आधा पहर रातिएसँ प्राती गाबइ बैसि
जाइत छथि।

Sanjit Kumar Ram
26/09/20